रसूले रहमत

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद रह

अनुवादः

डॉ. रफ़ीक़ अहमद

किताब का मूल नाम	:	रहमतुल्लिल आलमीन
नाम किताब (अनुवादित)	:	रसूले रहमत सल्ल
लेखक	:	मौलाना अबुल कलाम आज़ाद रह.
हिन्दी अनुवाद	:	डा रफ़ीक़ अहमद
हिन्दी एडीशन	:	2015
प्रतियाँ	:	1000
पृष्ठ	:	28
कम्पोज़िंग	:	
प्रिन्टर्स	:	
क़ीमत	:	

सारी इन्सानियत के लिये रहमत

यहाँ पैग़म्बरे इस्लाम सल्ल० के ज़हूर की एक ऐसी विशेषता बयान की गई है जो क़ुरआन के बयान की गई विशेषताओं और ख़ूबियों में सबसे ज़्यादा अहम और नुमायां है। यानी रहमतुल्लिल आलिमीन ! यह ज़हूर किसी एक मुल्क, किसी एक क़ौम, किसी एक नस्ल ही के लिये नहीं बल्कि पूरी दुनिया के लिये रहमत का ज़हूर (प्रदर्शन) है। यह विशेषता बयान करके क़ुरआन ने एक कसौटी हमारे हवाले कर दी है। इस पर हम ज़हूर की सारी सच्चाईयां परख सकते हैं। अगर यह वास्तव में सारी इन्सानीयत के लिये रहमत का प्रदर्शन साबित हुआ है तो उसकी सच्चाई में कोई सन्देह नहीं। अगर ऐसा नहीं हुआ है तो फिर सच्चाई ने क़ुरआन का साथ नहीं दिया। हमारा फ़र्ज़ है कि हम हक़ीक़त की स्वीकृति हक़ीक़त के लिए करें।

यह जांच इतिहास की निष्पक्ष जांच होनी चाहिये। इस प्रकार की धार्मिक आस्थाओं और विश्वासों से पाक, हर तरह की तरफ़दारियों से दूर। क्योंकि यहां हक़ीक़त की अदालत मौजूद है और वह सिर्फ़ हक़ीक़त ही नहीं शहादत (साक्ष्य) पर यक़ीन करती है।

इतिहास का फ़ैसला

जिहालत और भेदभाव ने हमेशा एलाने हक़ीक़त की राह रोकनी चाही है, लेकिन रोक नहीं सकी। इसके फ़ैसले में भी तारीख़ ने देर लगाई, आख़िरकार उसे मानना पड़ा। ज़रूरी है कि फ़ैसला ख़ुद उसी की ज़बान से सुना जाये और एक मोमिन और मुसलमान की तरह नहीं बल्कि एक

इतिहासकार की तरह इन्सानी दुनिया के एक-एक गोशे से गवाही मांगी जाये। अफ़सोस है कि इस वक़्त तक कोई कोशिश ऐसी नहीं की गयी, जिसे इस विषय पर अहम और पर्याप्त समझी जा सके। हमने ''क़ुरआनी तफ़सीर की भूमिका'' में इसकी कोशिश की है और एक ख़ास चैपटर का शीर्षक यही विषय है। यहाँ इतनी तफ़सील की गुंजाइश नहीं और संक्षेप फ़ायदेमन्द नहीं, इसलिये मजबूरन क़लम रोक लेना पड़ता है।

रहमत की बारिश और ज़मीन की हरियाली

जब ज़मीन प्यासी होती है तो ज़मीन व आसमान का मालिक पानी बरसाता है, जब इन्सान अपनी गिज़ा (आजीविका) के लिये बेक़रार होता है तो वह परवर दिगार रबी के मौसम को भेज देता है, जब सूखे के आसार नज़र आने लगते हैं तो रहमत के बादल आसमान पर छा जाते हैं।

اَللّٰهُ الَّذِیْ یُرْسِلُ الرِّیٰحَ فَتُثِیْرُ سَحَاباً فَیَبْسُطُهٗ فِی السَّمَآءِ کَیْفَ یَشَآءُ وَیَجْعَلُهٗ کِسَفًا فَتَرَی الْوَدْقَ یَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ط فَاِذَآ اَصَابَ بِهٖ مَنْ یَّشَاءُ مِنْ عِبَادِهٖ اِذَاهُمْ یَسْتَبْشِرُوْنَ (روم: ٤٨)

''वह ख़ुदा ही तो है जो हवाओं को भेजता है और हवायें बादलों को अपनी जगह से उभारती हैं और जिस तरह उसकी मर्ज़ी ने इन्तिज़ाम कर दिया है, बादल आस्मान में फैल जाते हैं, फिर तुम देखते हो कि उनके अन्दर से पानी बरसने लगता है और तमाम ज़मीन हरी-भरी दिखायी देने लगती है। फिर जब वह अपने बन्दों पर जो बारिश से मायूस हो गये थे, पानी बरसा देता है, तो वह कामयाब और ख़ुश होकर ख़ुशियां मनाने लगते हैं। (सूरह रूम 48)

क़ुदरती मिसालों की हिकमत

ख़ुदा की तमाम मिसालें और हिक्मतें जो वह अपने बन्दों की हिदायत के लिये खोलता है, हमेशा सामान्य और प्राकृतिक चीज़ों से सम्बन्ध रखती हैं, ताकि ज़मीन पर हर मख़लूक उनकी तसदीक कर सके और उनसे सबक़ और समझ हासिल कर सके। वह ऐसे वाकिआत और घटनाओं और अप्राकृतिक और बनावटी चीज़ों का उल्लेख नहीं करते जिन को देखने और समझने के लिये किसी ख़ास तरह की ज़िन्दगी, ख़ास तरह के इल्म और ख़ास तरह के माहौल की ज़रूरत हो, बल्कि उसकी हर तालीम ऐसी सामान्य और पूरी तरह से फितरी हालात से सम्बन्धित होती है, जिसको सुनकर जंगल का एक चरवाहा और सभ्य समाज का दार्शनिक दोनों बराबर से ख़ुदा की सच्चाई को पा सकते हैं। तो अगर तुमने फ़िलासफ़ी और दर्शन नहीं पढ़ा, अगर तुमने आसमानों में तैरने वाले पिन्ड समूहों को देखने के लिये किसी वेधशाला की क़ीमती दूरबीनें नहीं पाईं, अगर तुम को पदार्थों की विशेषताओं और हक़ीक़तों का अनुभव नहीं, अगर तुम किसी मदरसे या यूनिवर्सिटियों के अन्दर बरसों तक नहीं रहे, अगर तुम रेगिस्तान के रहने वाले हो अगर तुम पहाड़ों की चोटियों पर निवास कर रहे हो, अगर घास-फूंस की एक छत और झरनों की एक टूटी-फूटी दीवार रहने और बसने के लिये तुम्हारे हिस्से में आई है और इस तरह तुम नहीं जानते कि अपने ख़ुदा को आसमान के अजीब व ग़रीब सितारों के अन्दर क्यों कर देखो और उसके हुस्न और ख़ूबसूरती को तत्वों और कणों के मिश्रण के

अन्दर क्यों कर ढूढों, फिर भी तुम इन्सान हो, तुमको रूह दी गयी है और तुम ज़मीन पर बसते हो, तुम आस्मान की हर बदली के अन्दर, बादलों के हर टुकड़े के अन्दर हवाओं के हर झोके के अन्दर, बारिश की हर बूंद के अन्दर, अपने ज़िन्दा व जावेद ख़ुदा को, उसकी हिकमत व क़ुदरत को, उसकी रहमत व दया को, उसके प्यार और मुहब्बत को देख सकते हो, और उसे पा सकते हो, तुम में से कौन है, जिसने उम्मीद और नाउम्मीदी की नज़रों से कभी आस्मान को नहीं देखा और उसकी बिजलियों की चमक और बादलों की गरज के अन्दर अपनी खोई हुई उम्मीद को नहीं ढूंढा ?

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّ طَمَعًا الخ (روم۔٢٤)

''और क़ुदरते इलाही की एक बड़ी निशानी यह है कि जब ज़मीन प्यासी होती है और सूखे के आसार हर तरफ़ छा जाते हैं तो वह आस्मान पर बारिश की अलामतें पैदा कर देता है और तुम उम्मीद की नज़रों से उन्हें देखते हो''।

मौत के बाद ज़िन्दगी

फ़िर वह कौन है जब तुम और तुम्हारी प्यासी और बेक़रार ज़मीन पानी के एक-एक बूंद के लिये तरस जाती है, मिट्टी का एक-एक कण पानी और नमी के लिये व्याकुल और बेक़रार हो जाता है यहाँ तक कि पूरा भूमण्डल बेखुदी में सूरज की अग्निशाला से बहुत क़रीब हो जाता है। कायनात की तमाम प्राकृतिक हरियाली और हरे-भरे दरख्त अपनी सुन्दरता और आकर्षण को खो देते हैं, पक्षियां अपने घोसलों में, टहनियां पौधों में

और इन्सान घरों में पानी के लिये मातम करता और हर दम आस्मान की गर्म और सूखे फ़िज़ा की तरफ़ मायूसी की निगाहें उठाता है, तो वह ख़ुदा अपनी मुहब्बत व रूबूबीयत (पालनकारिता) के पर्दे में आता है और मायूसी के बाद उम्मीद का, नामुरादी के बाद मुराद का, मौत के बाद ज़िन्दगी का पैग़ाम ज़मीन के एक-एक ज़र्रे तक पहुँचा देता है।

وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَيُحْيِي بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ۔(روم۔٢٤)

''उसकी पालनकारिता और दया को देखो कि जब तक उम्मीद की नज़रों से आसमान को देखते हो और तमाम ज़मीन पर मौत और तबाही छा जाती है तो वह आसमान से पानी बरसाता है और ज़मीन पर मौत के बाद ज़िन्दगी पैदा हो जाती है यक़ीनन क़ुदरतें इलाही के इस प्रदर्शन में बुद्धि एवं विवेक रखने वालों के लिये बड़ी ही निशानियां रखी गयी है। (रूम 24)

रूह की प्यास और दिल की भूख

यह वह ख़ुदाई इन्तिज़ाम है जो कायनात के पालनहार ने इन्सान के जिस्म की गिज़ा के लिये किया है, फिर क्या उसने इन्सान की रूह के लिये कुछ न किया होगा ? वह कायनात का रब जो ज़मीन की पुकार सुनकर उसे पानी देता और जिस्म की बेक़रारी देख कर उसे गिज़ा बख़्शता है, क्या रूह की प्यास बुझाने के लिए कुछ नहीं और दिल की भूख मिटाने के लिये उसके खज़ाने में कोई नेमत नहीं? वह कि उस की मुहब्बत ज़मीन की मिट्टी को सूखती हुयी नहीं देख सकती और पेड़-पौधों की टहनियों को वह हरे-हरे पत्तों और

रंग-बिरंगें फूलों की सजावट से वंचित नहीं रखता, क्या वह इन्सानी रूह को तबाही व बर्बादी के लिये छोड़ देगा और आलमे इन्सानीयत का मुर्झा जाना उसे अच्छा लगेगा- वह तमाम आलम का पालनहार जो तुम्हारे जिस्म को गिज़ा देकर मौत से बचाता है, क्यों कर मुम्किन है कि तुम्हारी रूह को हिदायत देकर गुमराही से न बचाये ?

जब फिरऔन ने हज़रत मूसा अलै० से पूछा कि :

مَنْ رَّبُّكُمَا يَامُوْسٰى۔(طٰہٰ ۔ ۵۰)

''तुम्हारा परवरदिगार कौन है ऐ मूसा? तो हज़रत मूसा अलै० ने न सिर्फ़ अपने परवरदिगार की ख़बर ही दी बल्कि उसके इलाह की ठोस और फ़ितरी दलील भी चन्द लफ़्ज़ो में बयान कर दी।

رَبُّنَا الَّذِیْ اَعْطٰی كُلَّ شَیْءٍ خَلْقَهٗ ثُمَّ هَدٰی۔ (طٰہٰ : ۵۰)

''हमारा रब वह है जो ''रब'' है और उसके लिये उसकी रूबूवीयत ने काइनात की हर चीज़ को उसकी बुनियादी ज़रूरतें बख्शी, फिर उसके बाद उनकी हिदायत कर दी, ताकि सही और प्राकृतिक तरीके पर कारबन्द रहकर अपनी ख़िलकत के मक़ासिद को हासिल करें।''

पस उसने ज़मीन की मिट्टी के अन्दर पालने और परवरिश करने की क़ूव्वत (शक्ति) रखी, फिर पानी बरसा कर उसकी हिदायत कर दी, यानी उसके आगे अमल की राह खोल दी और जिसकी रुबूबियत (पालनकारिता) और मालिकियत (स्वामित्व) ने कायनात के एक-एक ज़र्रे के लिये ज़िन्दगी और हिदायत दोनों का सामान कर दिया, इन्सान को भी जिस्म और रूह दोनों के साथ पैदा किया है और उसके लिये ज़िन्दगी और हिदायत दोनों का सामान रखता है।

रहमते खुदावन्दी के खज़ाने

उसकी रूबूबीयत (पालनकारिता) ने जिस तरह जिस्म के लिये ज़मीन के अन्दर तरह-तरह के खज़ाने रखे हैं, इसी तरह रूह और आत्मा की गिज़ा से भी उसके आसमान भरे पड़े हैं, जिस तरह जिस्म की गिज़ा और ज़मीन के भौतिक जीवन और नमी के लिये आस्मान पर बदलियां फैलतीं हैं, बिजलियां चमकती हैं और मूसलाधार पानी बरसता है, ठीक इसी तरह रूह और दिल की समुन्दरी वातावरण में भी बदलाव होते हैं। यहां अगर ज़मीन की मिट्टी पानी के लिये तरसती है, तो वहां भी इन्सानियत की महरूमी हिदायत की मार्गदर्शन के लिये तड़पने लगती है, यहां पत्ते झड़ते हैं, टहनियां सूखने लगती हैं और फूलों के रंगीन पंखुड़ियां बिखर जाती हैं तो तुम कहते हो कि आस्मान को रहम करना चाहिये। वहां भी जब सच्चाई का पौधा मुर्झा जाता है, नेकी की खेतियां सूख जाती हैं, अदालत व इन्साफ़ का बगीचा वीरान हो जाता है और ख़ुदा के कलिमये हक़ व सच्चाई का पाकीज़ा पौधा दुनिया के हर कोने और हर हिस्से में बेपत्तियों और बेफूल के नज़र आने लगते हैं तो उस वक़्त इन्सानीयत की आत्मा चीख उठती है कि ख़ुदा को रहम करना चाहिये। वहां ज़मीन पर मौत तारी होती है तो ख़ुदा की बारिश उसे फिर उठा कर बिठा देती है।

وَهُوَالَّذِیْ یُرْسِلُ الرِّیٰحَ بُشْرًا م بَیْنَ یَدَیْ رَحْمَتِهٖ ط حَتّٰٓی اِذَآ اَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنٰهُ لِبَلَدٍ مَّیِّتٍ فَاَنْزَلْنَا بِهِ الْمَآءَ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ مِنْ کُلِّ الثَّمَرٰتِ ط کَذٰلِکَ نُخْرِجُ الْمَوْتٰی لَعَلَّکُمْ تَذَکَّرُوْنَ۔ (اعراف:۵۷)

''और वह परवर दिगार आलम ही तो है कि बारिश से पहले हवाओं को भेजता है जो बारिशे रहमत के आने की ख़ुशख़बरी सुना देती हैं, यहां तक जब उसका वक़्त आ जाता है तो वह वज़नी बादलों को हर्कत देती है और हम उन्हें एक ऐसे शहर के ऊपर ले जाकर फैला देते हैं जो हलाक हो चुका है और ज़िन्दगी के लिये प्यासा है। फिर पानी बरसता है और ज़मीन की मौत को ज़िन्दगी से बदल देता है, उसकी नमूबख्शी से तरह-तरह के फल पैदा होते हैं और समस्त प्राणी अपनी गिज़ा हासिल कर लेते हैं। ठीक इसी तरह हम मुर्दों को भी उठाते हैं। और जो कुछ कहा गया है वह दरअस्ल एक मिसाल है कि तुम अक्ल और समझ हासिल करो।

रहमते इलाही का विश्वव्यापी प्रदर्शन

आलमे इन्सानीयत की रूहानी फ़ज़ा का एक ऐसा ही महान इन्किलाब था जो छठीं सदी ईसवी में ज़ाहिर हुआ। वह रहमते इलाही की बदलियों का एक सर्वव्यापी नमूना था जिसके फ़ैज़ाने आम ने तमाम काइनाते हस्ती को हरियाली व शादाबी की ख़ुशख़बरी सुनाई और ज़मीन की ख़ुश्की और महरूमियों की बदहाली का दौर हमेशा के लिये ख़त्म हो गया। वह ज़ाते पाक जिसने सीना (पहाड़ी का नाम) की चोटियों पर कहा था कि मैं अपनी क़ुदरत की बदलियों के अन्दर जलती हुई बिजलियों के साथ आऊंगा और दस हज़ार क़ुद्दूसियों के साथ मेरे जाह व जलाले इलाही का इज़हार, सो बिल आख़िर वह आ गया और सईर व फ़ारान (पहाड़ियों का नाम) की चोटियों पर उसकी रहमत की बूंदे पड़ने लगीं।

यह हिदायते इलाही (ईश्वरीय मार्गदर्शन) की तकमील (सम्पूर्णता) थी, ये शरीअते ख़ुदावन्दी के बुलन्दी का आख़िरी दिन था। यह नबियों और रसूलों के आगमन और नुज़ूले रहमत का ख़ात्मा था। यह इन्सानी खुशकिस्मती का आख़िरी पैग़ाम था। यह विरासते ज़मीन की आख़िरी बख्शिश थी, यह उम्मते मुस्लिमा के ज़हूर (प्रदर्शन) का पहला दिन था और यह हज़रत ख़त्मुल मुरसलीन व रहमतुल्लिल आलमीन हज़रत मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह की मुबारक पैदाइश थी, सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ।

यही विलादते नबवी का वाक़िया है जो इस्लाम के ज़हूर का पहला दिन था और यही रबीउल अव्वल का वह महीना है, जिसमें इस उम्मते मुस्लिमा की बुनियाद पड़ी, जिसे तमाम आलम के मार्गदर्शन और रहनुमाई का मन्सब अता होने वाला था। यह रेगिस्ताने हिजाज़ की बादशाहत का पहला दिन था। यह अरब की तरक़्क़ी व बुलन्दी के बानी (संस्थापक) की पैदाइश न थी, यह मात्र क़ौमों की ताक़तों का एलान न था। इसमें सिर्फ़ नस्लों और मुल्कों की बुजुर्गी की दावत न थी जैसा कि हमेशा हुआ है और जैसा कि दुनिया के इतिहास की आखिरी पूंजी है बल्कि यह सम्पूर्ण विश्व की ख़ुदाई बादशाहत का तमाम तारीख़ का आख़िरी सरमाया है, बल्कि यह आलम की रब्बानी बादशाहत का यौमे मीलाद (जन्मदिन) था। यह दुनिया की तरक़्क़ी और उन्नति के संस्थापक की पैदाइश थी। यह कायनात की ख़ुशकिस्मती का प्रदर्शन था। यह इन्सानियत के बुलन्द मुक़ाम व सम्मान का कियामे आम था। यह इन्सानों के सम्मान और श्रेष्ठता की स्थापना थी। यह इन्सानों की

बादशाहतों, क़ौमों की बड़ाइयों और मुल्कों और देशों के विजयों का नहीं बल्कि खुदा की एक ही और विश्वव्यापी बादशाहत के अर्श जलाल व जबरूत (अज़मत और बुजुर्गी का सिंघासन) का आख़िरी और स्थाई प्रदर्शन था।

इसलिये यही दिन सब से बड़ा है क्योंकि इसी दिन दुनिया की सबसे बड़ी महानता ज़ाहिर हुई। उसकी याद न तो कामों से सम्बद्ध है और न नस्लों से, बल्कि वह तमाम दुनिया की एक सामान्य और संयुक्त महानता है जिसको वह उस वक़्त तक नहीं भुला सकती, जब तक उसे सच्चाई और नेकी की ज़रूरत है और जब तक उसकी ज़मीन अपने अस्तित्व और स्थायित्व के लिये न्याय और सच्चाई की मोहताज है ।

दुनिया की बड़ाइयां और उनके नतीजे

दुनिया में बड़े-बड़े इन्क़िलाब आये। यह इन्क़िलाब ख़ास इन्सानों के वजूद से सम्बंध रखते हैं। इसीलिये उन महान व्यक्तियों के जन्मदिनों को भी दुनिया महानता के साथ याद रखना चाहती है और इस लिहाज़ से उसकी यादगारों की सूची भी बड़ी लम्बी है। इसमें राजा-महाराजाओं के सोने के सिंघासनों की क़तारें हैं। विजेताओं की अनगिनत तलवारों की झन्कार है। विजेताओं और सेनापतियों के जिरह-बख्तर की सुरक्षा कवचों की हैबत है। हकीमों की हिकमतों और दानाइयों के दफ़्तर हैं दार्शनिकों और विद्वानों के ज्ञान और ग्रंथों के खज़ाने हैं, वैज्ञानिकों के अविष्कार हैं, देशभक्तों की नसीहतें हैं, क़ौमी रहनुमाओं और मार्गदर्शकों की कोशिशों और संर्घषों की कहानियां हैं। लेकिन प्रश्न यह है कि दुनिया अपनी अज़मत और महानता के

असली दिन को याद रखना चाहती है तो उनमें से किसे याद रखे? इनमें से कौन है जिसने दुनियां को सबसे महान चीज़ प्रदान की है ताकि वह भी सब से पहले और सबसे ज़्यादा उसकी याद को प्यार करे।

साहसी और बहादुर शहंशाह :-

आओं, हम सबसे पहले बड़े-बड़े साहसी और बहादुर शहंशाहों को देखें जिन्होंने दुनिया के बड़े-बड़े रक्बों को तलवार की नोक पर रख लिया और ऐसे अजीब व ग़रीब किले और महलों में बसे, जिनकी दीवारें और छतें चाँदी व सोने और मूंगे व मोतियों से बनाई गयी थीं। उन्होंने अत्यधिक माल व दौलत जमा किया, उनके पास विनाशकारी और तबाही मचा देने वाले हथियार थे और उनकी दास्ता और ग़ुलामी में इन्सानों का सबसे बड़ी जमाअत थी।

लेकिन अगर दुनिया उनकी पैदाइश को याद रखे तो बतलाओ दुनिया के लिये उन्होंने क्या किया ? उनकी विजयें बहुत फैली हुयीं थीं और उनकी वह दौलत जो उन्होंने आबादियों और बस्तियों को उजाड़ कर लूटी थीं, बड़े-बड़े वसीअ रक़्बों के अन्दर आती थीं, लेकिन दुनिया को उससे क्या मिला कि दुनिया की गर्दन उन की याद के आगे झुके? अगर वह बहुत बड़े विजेता थे, तो उसको यूं कहो कि उन्होने सबसे ज़्यादा दुनिया को वीरान किया, सबसे ज़्यादा उसकी आबादियों को उजाड़ा, सबसे ज़्यादा ख़ून की नदियां बहाई, सबसे ज़्यादा ख़ुदा के बन्दों के गले में अपनी गुलामी की लानत का तौक़ डाला। फिर क्या दुनिया अपनी वीरानियों को, क़त्ल व ग़ारत को, तबाही व बर्बादी को और अपनी गुलामी की लानत के नापाक और अशुभ

दिनों को याद रखे? जिनकी योग्यताओं ने यह अभिशाप दिया और हम उनकी पैदाइश की मनहूसीयत पर खुशियां मनाये।

सिकन्दर और दूसरे विजेता :-

सिकन्दर दुनिया का सबसे बड़ा विजेता था, जिसने पूरी दुनिया से अपने तख़्त (सिंहासन) की पूजा करानी चाही, लेकिन दुनिया अगर उसकी पैदाइश को याद रखे तो यह दिन किन वाकिआत और घटनाओं की याद होगी? यह दुनिया की वीरानियों, बर्बादियों, तबाहियों तथा गुलामी की लानतों का एक बहुत बड़ा भण्डार होगा, जो उसे हाथ आयेगा। दुनिया में जितने भी बादशाह पैदा हुये, अगर तुम उनकी ज़िन्दगी के तमाम कारनामों का निचोड़ मालूम करना चाहो, तो इसके सिवा कुछ न होगा कि वह जितने बड़े बादशाह थे, उतने ही ज़्यादा उनकी फ़ितरी क़ूव्वतों के लिये पत्थर थे, उतने ही ज़्यादा इन्सानों को अपना गुलाम बनाने वाले थे, उतने ही ज़्यादा उनकी क़ुदरती हर्कत व नशोनुमा के लिये ज़ंजीर थे और उतने ही ज़्यादा वह ख़ुदा की अता की हुई नेक फ़ितरत और इन्सान के मान-सम्मान के लिये उनके अन्दर बर्बादियों और तबाहियों की नहूसत थी। इसलिये जिनका वजूद ख़ुद दुनिया के लिये एक ज़ख़्म था, वह उनकी यादों में अपनी खोई हुई शक्ति कैसे पा सकते ?

हकीम और फ़लसफ़ी (दार्शनिक) :-

हकीमों की हिक्मत, दार्शनिको का दर्शन, अविष्कारों के अविष्कार निसन्देह विश्व के इतिहास के महत्वपूर्ण यादगार हैं, लेकिन अगर वह अपनी

यादगारों के आगे दुनिया को झुकाना चाहते हैं, तो उन्हें बतलाना चाहिये कि उन्होंने अपनी हिक्मतों और अजीब व ग़रीब अविष्कारों से दुनिया की असली परेशानियों और ज़मीन की वास्तविक मुसीबतों के लिये क्या किया? आस्मान की फ़िज़ा में अनगिनत सितारों की क़तारें फैली हुई हैं। वास्तव में वह व्यक्ति बहुत बड़ा बुद्धिमान, विवेकशील, पैनी निगाह रखने वाला था ग़ौर करने वाला दिमाग़ और बड़ी ही कोशिश करने वाली नज़र रखता था, जिसने हमें सबसे पहले बतलाया कि यह बड़े-बड़े सितारे हैं इनमें ठहरे हुये तारे भी हैं और उनकी हर्कतों के निर्धारित अवक़ात (समयावली) और दिन हैं, लेकिन दुनिया जब सितारों की यह बहुत बड़ी सच्चाई नहीं जानती थी, तो उस वक़्त भी बीमार थी और यह मालूम करके भी बीमार ही रही। उसकी असली परेशानी यह न थी कि इन्सान आस्मान के बारे में थोड़ा जानता है, बल्कि हमेशा से वह इस मर्ज़ में गिरफ़्तार रही कि इन्सान ख़ुद अपने सम्बंध से अपने नेक फ़ितरत के निस्बत से अपनी नेकी की राह के सम्बन्ध से कुछ भी नहीं जानता।

कारीगर :-

उसको अगर तुम बड़ा समझते हो, जिसने इन्सान के लिये निर्माण कला और विभिन्न चीजों का अविष्कार किया ताकि वह मज़बूत और शानदार मकानों और खूबसूरत छतों के नीचे बैठे, तो तुम्हें बतलाना चाहिये कि क्या इन्सान पेड़-पौधों के नीचे बैठ कर नेक और सच्चा इन्सान न था और बड़े-बड़े महलों के अन्दर रह कर उसने अपनी खोई हुई हक़ीक़त पा ली? दुनिया की अस्ल बीमारी सच्ची इन्सानीयत का खो जाना है। इन्सानों की

खुशहाली और दुनिया का अम्न और शान्ति ही वह नेमत है जिसकी तलाश में शुरू से काइनात का ज़र्रा-ज़र्रा अस्त-व्यस्त हो रहा है फिर बतलाओ कि अगर यह बड़े-बड़े कारीगर और अविष्कारक ही इन्सानीयत और मानवता की सबसे बड़ी बुलन्दी पर थे, तो उनके अविष्कारों ने इन्सानों को कितना अमन दिया? किस क़दर शान्ति बख्शी ? कहां तक नेक और सच्चे रास्ते पर चलाया? इन्सानी ज़िन्दगी का कौन सा रहस्य उजागर किया? ख़ुदा और बन्दों के रिश्तों को कहां तक जोड़ा? फिर अगर वह यह न कर सके तो दुनिया उनकी ईजादों और अविष्कारों को अपने खज़ाने में रख सकती है, पर उनकी याद में उसके लिये कोई खुशी नहीं हो सकती क्योंकि उन्होंने उसके असली दुख दर्द के लिये कुछ भी नहीं किया।

मौजूदा दौर :-

अच्छा, प्राचीन दुनिया के भंडार में जो कुछ है, उसे छोड़ दो, कुल्दान, बाबुल और यूनान व इसकंदरिया के खन्डरों और मिसमार की हुई बुनियाद के अन्दर अगर दुनिया के लिये कुछ न था, तो बहुत सम्भव है कि आज लन्दन और वर्लिन व पेरिस की अजीब व ग़रीब आबादियों बुद्धि एवं विवेक को बेकार कर देने वाली सभ्यताओं के अन्दर दुनिया को वह चीज़ मिल जाये, जिसके लिये वह शुरू से हैरान और परेशान रही है। योरूप की वर्तमान सभ्यता की शुरूआत जिन बड़े-बड़े दावों से होती है, ज़रूरी है कि वह सबके सब इस वक़्त तुम्हारे सामने हों, क्योंकि हमारी मौजूदा हालात में उनको दुहराने की ताक़त नहीं। हम को बतलाया गया था कि मौजूदा सभ्यता को दुनिया के पुरानी सभ्यताओं से कोई समानता नहीं। उनकी विभिन्न शाखों में

आपस में कोई सम्बंध न था। उनकी बुनियादें सच्चाई व हक़ीक़त पर न थीं। वह इन्सानी इल्म व अमल की समस्त शाखों को एक ही वक़्त में मुकम्मल न कर सकती थी। उन्होंने आमाल (कर्मविधान) में कोई सही संतुलन और क्रम पैदा नहीं किया और उन्हें अपनी सभ्यता के प्रचार एवं प्रसार के वह संसाधन हासिल न थे जिनके ज़रीये हमने भूमण्डल को ज्ञान और सभ्यता का एक घर बनाया है। इसलिये पिछली सभ्यताओं की नाकामी से मौजूदा सभ्यता की असफलता को प्रमाणित नहीं किया जा सकता। यह और इसी तरह के दावे थे जिनसे मौजूदा सभ्यता की फ़ज़ा भर गयी और जिनके ज़रीये से एलान किया जाता था कि दुनियां में सबसे बड़ी ताक़त मौजूदा सभ्यता की है हालांकि सबसे बड़ा सिर्फ ख़ुदा है।

لَقَدِ اسْتَكْبَرُوا فِي أَنفُسِهِمْ وَعَتَوْا عُتُوًّا كَبِيرًا۔ (فرقان:٢١)

''बिलाशुब्हा उन्होंने यह कहकर अपने अन्दर बड़ा घमण्ड पैदा किया और बड़ी सख्त दर्जे की सरकशी (उद्दण्डता) की'' (फ़ुरकान 21)

अपने हाथों घर बर्बाद करने वाले

सो अब तुम देखो कि दुनिया अपने एतेराफ़ का सर झुकाने के लिये जब सभ्यता के उस सबसे बड़े अहंकारी बुत की तरफ जाती है, तो उसे क्या जवाब मिलता है? आज सभ्यता शैतानी अहंकार के दुष्ट बुत को चूर-चूर कर दिया गया है, ख़ुदा का वह ज़बरदस्त और बेपनाह हाथ जो क़ौमे समूद व आद और बड़ी-बड़ी आबादियों और बड़े- बड़े महलों वालों को सज़ा दे चुका था। और अपने जलाल और भयानकता की भड़कती हुई चमक दिखला रहा है। तुम योरूप के युद्धों और सभ्य क़ौमों के आपसी क़त्ल और गारतगरी पर

जानवरों की तरह नहीं बल्कि इन्सानों की तरह नज़र डालो, और देखो कि यह क्या है जो तुम्हारे सामने हो रहा है? यह सभ्यता और दानवता की जंग नहीं, यह ज्ञान और अज्ञानता का टकराव नहीं। यह सभ्यता ही जो सभ्यता से टकरा रही है। यह इल्म है जो क़त्ल कर रहा है। यह कारीगरी है जो कारीगर को पीस रहा है। यह अविष्कार का अहंकारी शैतान है जो, अविष्कार के ही राक्षस को डस रहा है और इस तरह सभ्यता का घमण्ड ही है जो सभ्यता के घमंड को चूर-चूर और टुकड़े-टुकड़े कर रहा है ।

يُخْرِبُوْنَ بُيُوْتَهُمْ بِاَيْدِيْهِمْ (الحشر:٢)

''अपने घरों को वह अपने हाथों ही से उजाड़ रहे हैं'' (सूरह हदीद)

पस अगर बेचारी दुनिया उन इंसानों को याद रखना चाहती है जो सभ्यताओं के बादशाह थे, जो इल्म के मालिक थे और अविष्कार और कला-कौशल के देवता थे, तो तुम उसका हाथ पकड़ो और उसे आज योरूप के उन मैदानों के सामने ले जाकर खड़ा कर दो, जहां सभ्यता और ज्ञान की महिमा और महानता का सिंहासन आग और खून के बादलों और धुंये और ज़हरीली गैसों की ज़हरीली फज़ा के अन्दर बिछाया गया है और विनष्ट इमारतों के खन्डरों और लाल खून की नदियों और इन्सानों की लाशों के ढ़ेरों पर उसके महानता के सुनहरे सुतून लगा दिये गये हैं। फिर उससे कहो कि वह अपनी एहसान मन्दी और शुक्र गुज़ारी के लिये इन महान व्यक्तियों में से इन्सानों में से किसी बड़ाई को छांट ले जो आज गेहूँ और जौ के लिये रोते हैं क्योंकि हवा में उड़ने वाली मशीनें और पानी को अलग-अलग हिस्सों में बदल लेने का इल्म उनके लिये कुछ काम न आया।

किसकी याद मनायें ?

वह इनमें से किस को अपनी रहनुमाई व मार्गदर्शन और याद के लिये चुनेगी? क्या वह उस सब से बड़े फ़िलास्फर को याद करेगी, जो चौदहवें सदी ईसवी में आया और उसने तज्रिबे की राह खोली, जिस राह ने इन्सानों को तबाही व बर्बादी और हिंसा और ख़ूंरेज़ी के सबसे ज़्यादा बड़े हथियार तक पहुंचा दिया? क्या वह कमिस्ट्री के उस देवता को याद करेगी जिस पर वर्तमान सभ्यता को सबसे ज़्यादा गर्व है और जिसने ऐसी ज़हरीली गैसें, ऐसे भयानक बम और इसी प्रकार की ऐसी चीज़ बना डालीं कि जिनके आगे मानव जाति बिल्कुल बेबस हो जाती हैं और मिनटों के अन्दर बड़ी-बड़ी आबादियाँ मौत के घाट उतर जाती हैं? अच्छा, भाप की ताक़त के अविष्कारक को बुलाओ, उसकी बड़ाई कैसी अजीब थी जिसने भाप के ग़ैर मामूली ताक़त को इन्सान का गुलाम बना दिया, लेकिन आह ! वह इस दुनिया के लिये क्या करे जो मौत की नहीं बल्कि ज़िन्दगी की भूखी है और देख रही है कि भाप के शैतान ही के अन्दर वह सबसे बड़ी दुष्टता और कमीनगी है जिसने आज जंग के मैदानों में विभिन्न रूपों से सबसे बड़ी फुनकार मार दी है और तमाम इन्सानी इल्म व अक़्ल इस के बचाव के लिये बेकार हैं ?

फिर क्या दुनिया ज्ञान और सभ्यता के उन अहंकारी संस्थापकों की पैदाइश पर खुशियां मनाये जिन्होंने अपनी मौत और विनाश के लिये तो सब कुछ किया, मगर अमन व सलामती तथा शान्ति और सन्तुष्टि के लिये कुछ न कर सके ? उनके पास इन्सान के उड़ने, समुन्दरों के अन्दर तैरने, बिजली को क़ाबू में करने, हवा की तरंगों और ज़र्रों को अपने पत्र एवं पैग़ाम का दूत

बनाने और ख़ुद बख़ुद बजने वाले बाजों और बड़ी तेज़ी से चलने वाली सवारियों के लिये तो बड़ा भण्डार है, लेकिन इन्सान को नेक और शरीफ बनाने, ख़ुदा की अदालत व सच्चाई से ज़मीन को बसाने, शान्ति और सुकून की बादशाही को स्थापित कर देने, अन्याय एवं अत्याचार से ज़मीन को पाक करने ताकत और हुक्म के ज़ोर से कमज़ोरों को बचाने और इन्सानों को सांप और **बिच्छुओं की** तरह नहीं बल्कि इन्सानों के लिये रहने और बसाने के लिये कुछ भी नहीं किया।

तुमने योरोप की सभ्यता की कुत्तों की तरह लिपट कर और भेड़ियों की तरह चलकर हमेशा पूजा की है और मज़हब की पवित्र शिक्षाओं का मज़ाक उड़ाया है कि वह आख़िरत, आख़िरत कहता है मगर योरोप की तरह दुनिया की ज़िन्दगी के लिये कुछ नहीं बतलाया, लेकिन शायद तुम आज क़ुरआन हकीम की इस आयत को समझ सको जिसके ताल्लुक से सही हदीस में आया है कि उसकी तिलावत आख़िरी ज़माने के फितनों से बचायेगी।

هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْاَخْسَرِيْنَ اَعْمَالاً اَلَّذِيْنَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ○ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَلِقَآئِهٖ فَحَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيْمُ لَهُمْ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا ○

"तुम को बतलाऊं कि सबसे ज़्यादा नाकाम और नामुराद काम करने वाले कौन हैं ? वह जिनकी सारी मेहनत और ताकत सिर्फ दुनिया की ज़िन्दगी संवारने ही में खो गयी और जाहीलियत ने इनमें यह घमण्ड पैदा कर दिया कि वह बहुत सी खूबियों का काम कर रहे हैं। यही लोग हैं जिन्होंने

अल्लाह की निशानियों और उसके रिश्ते को न समझा और उससे इन्कार किया तो इनका तमाम किया-धरा बर्बाद गया और कियामत के दिन उन्हें कोई वज़न नसीब न होगा। दूसरी जगह कुफ्र के सरदारों के ये आमाल बतलाये। ''सिर्फ दुनिया की ज़िन्दगी का एक ज़ाहिरी पहलू उन्होंने जान लिया है और वह आख़िरत के मामलात से बिल्कुल ग़ाफिल हो गये हैं।

''आख़िरत'' से मक़सूद यह नहीं है कि दुनिया और दुनिया के काम-धाम छोड़ दिये जायें बल्कि उसका व्यवहारिक प्रदर्शन योरोप की मौजूदा ज़िन्दगी को समझो जिसने अपने आपको सिर्फ दुनिया ही के लिये समर्पित कर दिया है और उसके घमण्ड में वह अल्लाह और इसके सम्बन्धों के लिये कोई वक्त और फिक्र न निकाल सकी। नतीजा यह निकला कि उसने वह चीज़ तो हासिल कर ली जिसका नाम सभ्यता रखा गया है लेकिन वह चीज़ हासिल न कर सकी जो इन्सान के लिये वास्तविक सुख एवं शान्ति का मार्ग इस्लाम और फितरत का सीधा मार्ग है।

सीधा रास्ता

तुम कह सकते हो कि यह उन इन्सानों का हाल है जिनकी बड़ाईयां सिर्फ दुनिया तक सीमित थी लेकिन अगर दुनिया के लिये उनकी पैदाइश की याद में कोई सुकून और राहत का सामान मौजूद नहीं है तो वह उन सारी पंक्तियों से बाहर आ जायगी और दुनिया के बड़े-बड़े धर्मो में पनाह लेगी और धर्म संस्थापकों की महानताओं का नज़ारा करेगी। वह खुदा के रसूलों और उसके पास मौजूद संदेशों के पैगम्बरों को ढूंढेगी।

हाँ अगर दुनिया ऐसा करे तो यह हक़ीक़त में उसकी मुसीबतों का अन्त होगा, उसके स्थायी दर्द और बेचैनियों के लिये सुख और राहत की एक जीवन प्रदान करने वाली कोशिश होगी और वह बेशक अपनी मन्ज़िले मक़सूद को पालेगी। कुरआन हकीम ने भी उसके दुख का यही इलाज बतलाया है और जब कि वह बादशाहों, कौमी रहनुमाओं, भविष्य वक्ताओं और इल्म और मज़हब के झूठे दावेदारों के अहंकारी आंचल में लिपटी हुई थी तो उसे वसीअत की कि वह सच्चाई के रसूलों और खुदा की ओर बुलाने वालों की राह इख़्तियार करे और उन्हीं की ज़िन्दगी को अपना लक्ष्य बनाये।

يَعْلَمُوْنَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ عَنِ الْاٰخِرَةِ هُمْ غٰافِلُوْنَ۝

"खुदाया तू हमें सीधे रास्ते पर चला वह सीधा रास्ता जो तेरे नबीयों, सिद्दीकों, शहीदों और नेक बन्दों की राहे अमल है।"

लेकिन देखना यह है कि इस मैदान में आकर भी वह कौन सी ज़िन्दगी है जिसके आमाल व कूव्वत के अन्दर दुनिया को शान्ति का सन्देश मिल सकता है।

मज़हब का बटवारा

दुनिया में आज जो बड़े-बड़े मौजूद हैं वह क़ौमों के इल्म की तक़सीम के मुताबिक़ दो भागो में विभाजित किये जा सकते हैं।

एक सामी (Semitic) सिलसिला है, जिसके अधार पर यहूदी और इसाई कौमें अब तक दुनिया में बाक़ी हैं। दूसरा आर्यो का सिलसिला है जिससे गौतम बुद्ध सहित हिन्दुस्तान के समस्त धर्म प्रचारक सम्बन्धित हैं। फिर दुनिया के लिये अगर सबसे बड़ा रसूल यहूदी धर्म की तारीख़ में है, तो वह हज़रत मूसा अलै० की ज़िन्दगी और उनकी पैदाइश को

सबसे बड़ी घटना क़रार देगी। लेकिन अगर उसने ऐसा करना चाहा तो उसे यह समझने का अधिकार है कि हज़रत मूसा अलै० की जीवन शैली में अपने लिये अमन व शान्ति का सन्देश ढूढें। हज़रत मूसा अलै० के पवित्र जीवन का सबसे महत्वपूर्ण कारनामा यह है कि उन्होंने मिस्र की एक ज़ालिम और जाबिर हुकूमत के शिकन्जे से बनी इसराइल को नजात दिलाई और उसे गुलामी की लानत और नापाकी से निकाल कर, जो इन्सानियत के लिये सबसे बड़ी नापाकी है हुकूमत और शान्ति एवं सम्मान की शुद्धता तक पहुँचा दिया। बेशक उन्होंने अपनी क़ौम यानी बनी इसराईल की नस्ल के लिये निरन्तर संघर्ष किया और यह उनका दुनिया का यादगार उस्वये हसना (बेहतरीन नमूना) है जिसकी दुनिया को उनकी बुजुर्गी और फ़जीलत बयान करनी चाहिये। लेकिन सवाल यह है कि उन्होंने तमाम दुनिया के लिये क्या किया ? दुनिया सिर्फ बनी इसराइल ही का नाम तो नहीं है। गैरूल्लाह की बन्दगी और गुलामी की ज़ंजीरें सिर्फ बनी इसराईल ही के पांव में न थी बल्कि धरती की सम्पूर्ण आबादी के पांव इसके बोझ से ज़ख्मी थे, पस दुनिया के लिये वही तलवार प्रिय हो सकती है जो सिर्फ फिरऔन की डाली हुई जंजीरों ही को न काटे, बल्कि दुनिया के तमाम फ़िरऔनों यानी ज़ालिमों के अहंकारी सिंघासन को पलट दे।

उन्होंने सिर्फ बनी इसराइल को गुलामी से नजात दिलाई मगर तमाम दुनिया गुलामी से नजात पाने की तमन्ना रखती है।

हज़रत मसीह अलै०

दूसरा सबसे बड़ा इसराईली धर्म मसीही आन्दोलन है। लेकिन मसीही दावत की शिक्षा हमारे सामने है। इसके अलावा मसीहियत से सम्बंध रखने वाली कौमें जो कुछ कहेंगी, हम उन्हें हज़रत मसीह के नाम से स्वीकार

नही कर सकते। हज़रत मसीह ने कहा कि मैं सिर्फ तौरात को कायम करने आया हूँ, खुद कोई संदेश नही लाया (मती) उन्होंने स्पष्ट किया कि मेरा मिशन बनी इसराईल की इस्लाह और सुधार तक सीमित है यहां तक कि उन्होंने दूसरी जातियों को दावत देने से इन्कार किया और हमेशा अपने कामों और अपनी वसीयतों में अपनी शिक्षा को इसराईल के परिवार तक ही सीमित रखा। पस दरअस्ल उन्होंने जो कुछ भी खिदमत करना चाही वह मात्र बनी इसराईल नामी एक गुमराह कौम की थी। सारी दुनिया के लिये उनके पास कुछ न था।

फिर उनका ज़हूर उस वक्त हुआ जब कि रोम की अत्याचारी हुकूमत ने मुल्क शाम की पवित्र हरियालियों को रौंद डाला था और बुत परस्त कौमों की ज़ालिम व जाबिर हुकूमतें दुनिया के बड़े हिस्से को अपना गुलाम बनाये हुये थीं, लेकिन उन्होंने न तो इस जुल्म व ज़्यादती के सम्बंध से कुछ कहा और न इस पर कुछ आपत्ति जताई।

पहली सदी ईसवी के बाद जितनी अधिक कौमें दुनिया में आबाद हुयीं उनको हज़रत मसीह की शिक्षा और संदेश से कोई लेना-देना न था और वह पूरी तरह से यूनान के एक यहूदी सैन्ट पाल्स के धर्म की अनुयायी थीं। सैन्ट पाल्स ने मसीह के समस्त साथियों के धर्म के खिलाफ ग़ैर इसराइली व्यक्तियों को ईसाई बनाना शुरू किया और इस प्रकार रोम और यूनान के विभिन्न जज़ीरों और देहातों में एक नया समुदाय पैदा कर दिया। पस अगर दुनिया हज़रत मसीह की तरफ झुकना चाहेगी, तो दुनिया को उनकी ज़िन्दगी के कारनामों से अवगत होने के लिए बड़ी मुश्किल से एक चौथाई सदी हाथ आयगी, जिस के अन्दर उनके प्रशिक्षित साथियों के क्रियाकलाप नज़र आ

सकते हैं और यह कुछ वर्षो तक अखलाक व आदात की फ़जीलतों और खूबियों का कितना ही अच्छा नमूना क्यों न प्रस्तुत करें लेकिन उनमें दुनिया के लिये समस्त रूप से कोई नजात का आम पैग़ाम नहीं है।

फिर उससे नज़र अंदाज किये हुये नतीजों की बहस बाद में आती है। सबसे पहले दावत, एलान, दावा और तालीम का प्रश्न है। दुनिया हज़रत मसीह की याद पर क्यों सन्तोष करे जबकि खुद उन्होंने दुनिया के लिये कुछ न किया, बल्कि हमेशा उसे ठुकराया, बहिष्कार किया और उसके साथियों को, उसके दोस्तों को, उससे सम्बंध रखने वालों को खुदा की मेहरबानियों से वंचित बतलाया ? यहां तक कि एक आखिरी फतवा दे दिया ''तुम खुदा और दुनिया, दोनों की खिदमत नहीं कर सकते (मती २५-१६) ''ऊँट का सुई के नाके से निकल पाना इससे आसान है कि दौलत मन्द खुदा की बादशाहत में दाखिल हो (मती-२३-१६)

इसको भी छोड़िये और उसकी बेहतर से बेहतर व्याख्या जो कर सकते हो कर लो। यहां तक कि पाल्स की दावत ही को हज़रत मसीह अलै० की दावत मान लो और उन सारी जातियों को जिन्होंने मसीही के नाम पर बपतिस्मा का पानी अपने ऊपर छिड़का, मसीही दावत का परिणाम मान लो लेकिन फिर भी मसीही आन्दोलन के पूरे इतिहास का क्या हाल है ? जब तक मसीहियों की दुनिया पर हुकूमत रही, जिस वक्त तक मसीही मज़हब का धार्मिक अधिपत्य इन्सानों से पैरवी कराता रहा और जब तक कि मसीही रहनुमाओं और खलीफाओं की गुलामी से दुनिया ने मुंह नहीं मोड़ लिया, इतिहास साक्षी है कि उस वक्त तक उसका वजूद दुनिया के लिये, दुनिया के ज्ञान और सभ्यता के लिए, इन्सान और समाज के लिये, एखलाक़

और पाकीजगी के लिये और उन सबसे बढ़कर यह कि इन्सान की फितरी आज़ादी और इन्सानियत की भलाई के लिये एक बदतरीन लानत रहा, जिसने जलाया, उजाड़ा, तबाह व बर्बाद किया, क़त्ल किया, जेल खाने भरे, ज़बानों पर मुहरें लगायीं और इन्सानी दिमाग़ को बेकार किया। लेकिन इन्सान और इन्सानीयत की भलाई और तरक़्क़ी के लिये चन्द लम्हों का भी एक दौर पैदा न किया। प्रसिद्ध इतिहासकारों में गैज़र, **सैडयुलमरे और** ड्रेपर इस बारे में हमारे लिये बेहतरीन वर्णनकर्ता हैं।

लेकिन जिस वक्त से मसीहीयत की क़ूव्वत कमज़ोर पड़ी, सभ्यता की बेदीनी का दौर शुरू हुआ, मज़हबी जमाअतों और मज़हबी ख़िलाफ़त (पोप) के दौरे गुलामी से योरोप आज़ाद हो गया, तो उस वक्त से योरोप की वर्तमान सभ्यता की बुनियाद पड़ी और मसीही कौमों ने तरक़्क़ी करना शुरू की। अगर तुम कहते हो कि दुनिया के लिये सबसे बड़ी अज़मत और महानता मसीही धर्म के संस्थापक में थी तो खुद उसके संस्थापक ही ने हमें सत्य और असत्य का पैमाना बतला दिया कि-

''पेड़ अपने फल से पहचाना जाता है'' (मरकस १६-१६)

इसलिये दुनिया अगर मसीही धर्म में अपनी कामयाबी और खुशी ढूंढे तो उसको इन्सान की अमन व शान्ति और फितरी आज़ादी और श्रेष्ठता की जगह क़त्ल व ग़ारतगरी और दास्ता व गुलामी की यादगार जश्न मनाना पड़ेगा। क्योंकि मसीहीयत के दरख्त का सिर्फ यही फल हमारे सामने है।

तो क्या दुनिया इसके लिए तैयार है ?

यह जो कुछ था मसीही क़ौमों की पुरानी तारीख के बिना पर था, लेकिन अगर इस पर पिछली दो सदियों की घटनाओं और नतीजों को जोड़ दिया जाये जो योरोपी क़ौमों की सभ्यता से सम्बन्धित हैं तो दुनिया की मायूसी और निराशा ज़्यादा भयानक हो जाये।

आर्यों का सिलसिला

इसके बाद दुनिया के धर्मो में आर्य नस्लों की दावतें और शिक्षायें हमारे सामने आती हैं। लेकिन अफसोस कि दुनिया के लिये उनके पास भी कोई महान और कल्याणकारी संदेश नहीं। गौतम बुद्ध की सारी शिक्षाओं और उपदेशों का सार यह बतलाया जाता है कि ''नजात दुनिया के साथ रहकर हासिल नहीं हो सकती, तो दुनिया को जिन लोगों ने ठुकरा दिया, दुनिया उनके पास जाकर क्या सुख हासिल करेगी ? फिर उसने जो कुछ भी बतलाया और सिखलाया हो, लेकिन क़ौमों और मुल्कों के दायरे ही में उसकी दावत सीमित रही। हिन्दुस्तान में उसे सफलता नहीं मिली तो जापान और चीन में जाकर सीमित हो गयी। पस धरती अपनी इस मुसीबत के लिये जो रक़बों और मुल्कों में सीमित नहीं है, गौतम बुद्ध से क्या शिक्षा हासिल कर सकती है?

हिन्दुस्तान की धार्मिक शिक्षाओं के खजानों और उनकी प्रभावशाली प्राचीनता के महत्व से हम इन्कार नहीं कर सकते, फिर भी दुनिया के लिये उनके संस्थापकों की महानता के अन्दर क्या खुशी हो सकती है जबकि हिमालय की दीवारों और अरब सागर की मौजों से बाहर भी दुनिया

है, मगर हिन्दुस्तान के धार्मिक प्रचारकों ने सिर्फ हिन्दुस्तान के अन्दर बसने वाले ही को अपनी शिक्षायें सुपुर्द कीं।

पैदाइश मुबारक

दुनिया अगर अपनी नजात और मुक्ति के लिये बेचैन है तो उसके लिये सुख और शान्ति का सन्देश मात्र एक ही है और मात्र एक ही की ज़िन्दगी में है। उसकी बीमारी भी एक ही है, इसलिये उसके इलाज के नुस्खे भी एक से अधिक नहीं हो सकते। उसका पालनहार एक है, जो अपने एक ही सूरज को उसके जल-थल पर चमकाता और एक ही तरह की बदलियों से उसकी आबादी और वीरानी को हरा-भरा करता है। तो उसकी हिदायत व रहमत का सूरज भी एक ही है और चाहे बहुत से सितारे उसकी रोशनी से फायदा उठाते हों मगर उन सबके नूर का मर्कज़ और स्रोत एक ही है। कुरआन हकीम ने सूरज को ''सिराज'' कहा।

وَجَعَلْنَا سِرَاجًا وَّهَّاجًا ○

''और हमने आसमान में सूरज के चिराग़ को बड़ा ही रोशन बनाया'' (१३-७८) और इसी तरह उसके ज़हूर के भी ''सिराज'' कहा जिसकी शिक्षाओं और दया की रोशनी सम्पूर्ण धरती के अधियारों के लिये सुबह का पैग़ाम थी।

اِنَّا اَرْسَلْنٰکَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا وَّدَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا ○

''ऐ पैग़म्बरे इस्लाम ! हमने तुमको दुनिया के आगे हक़ की गवाही देने वाला, इन्सानीयत को खुशखबरी देने वाला, अल्लाह की तरफ उसके

बन्दों को बुलाने वाला और दुनिया के अंधियारों के लिये एक प्रकाशमान चेराग़ बनाकर भेजा''।

इसीलिए सम्पूर्ण जगत को प्रकाशमान करने के लिये यही एक हिदायत का रोशन चिराग़ है, जिसकी किरनों के अन्दर दुनिया अपने समस्त अंधियारों के लिये खुशखबरी की रोशनी पा सकती है और इसलिए सिर्फ वही एक है, जिसके उदय होने के दिन को दुनिया कभी नहीं भुला सकती और अगर उसने भुला दिया तो वह वक्त दूर नहीं जब उसे पूरे इश्क व मुहब्बत के साथ सिर्फ उसी के आगे झुकना पड़ेगा और उसी को अपने उम्मीद का काबा बनाना होगा।

विश्वव्यापी संदेश

इस पाक वजूद और बुज़ुर्ग हस्ती ने दुनिया में ज़ाहिर होकर यह नहीं कहा कि मैं केवल बनी इसराईल को फिरऔन की गुलामी से नजात दिलाने आया हूँ बल्कि उसने कहा कि तमाम इन्सानीयत को गैर इलाही गुलामियों से नजात दिलाना मेरे ज़हूर का मक़सद है। उसने सिर्फ इसराइल के घराने की खोई हुई शोभा ही से प्रेम नही किया, बल्कि सम्पूर्ण जगत की बिगड़ी हुई बस्तियों पर दया एवं सहानुभूति की निगाह डाली और उनकी दोबारा आबादी का ऐलान किया। उसने उस खुदा की मुहब्बतों की तरफ दावत नहीं दी जो सिर्फ सीना की चोटियों या हिमालय की घाटियों में बसता है, बल्कि जहानों के उस पालनहार की ओर बुलाया जो सम्पूर्ण संसार का पालनहार है और इसीलिए सम्पूर्ण जगत को अपनी ओर बुला रहा है। हमको दुनिया में सिकन्दर मिलता है, जिसने तमाम दुनिया पर अपनी विजय का पताका लहराना चाहा था लेकिन हम मानव इतिहास में खुदा के किसी रसूल

को नही पाते, जिसने सम्पूर्ण जगत की गुमराहियों और अंधियारों के खिलाफ़ जेहाद का ऐलान किया हो। इस प्रकार का मात्र एक ही ऐलान है जो दुनिया की रचना से अब तक किया गया है और इसलिये अगर दुनिया नस्लों और कौमों और रक़बों का नाम नहीं है बल्कि अल्लाह की मखलूकात (सृष्टियों) की उस पूरी नस्ल का नाम है जो कि धरती की पीठ पर बसती है, तो वह मजबूर है कि हर तरफ से मायूसी और निराशा की नज़रे हटा कर केवल उस एक ही ऐलाने आम के आगे झुक जाये और सिर्फ उसकी पैदाइश के दिन को अपनी उम्र का सबसे महान और अहम दिन यक़ीन करे।

تَبٰرَكَ الَّذِیْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰی عَبْدِهٖ لِیَكُوْنَ لِلْعَالَمِیْنَ نَذِیْرَاo

''क्या यही पाक और बर्कतों का स्रोत है ज़ात उसकी जिसने अपने महान बन्दे पर अलफ़ुरकान उतारी ताकि वह कौमों और मुल्कों ही के लिये नहीं बल्कि तमाम आलम की गुमराहियों के लिये डराने वाला हो''।

दुनिया में जिस क़दर हक़ और सच्चाई के एलानात मौजूद हैं अगर दुनिया भुला देगी, तो यह सिर्फ कौमों और मुल्कों की प्रतिष्ठा को भुला देना होगा, क्यों कि उससे ज़्यादा उन्होंने कुछ नहीं कहा, लेकिन अगर रबीउल अव्वल को उसने भुला दिया तो यह सम्पूर्ण जगत की नजात को भुला देना होगा, क्योंकि रबीउल अव्वल की रहमत किसी एक सरज़मीन के लिये नहीं बल्कि तमाम जहानों के लिये थी।